घर मे इस्लामी माहौल बनाने की जरूरत

शैख मुहम्मद इशाक मुलतानी.

नोट: आप से दरखास्त है की इसे भाषा या ग्राम्मर का अदब ना समझे.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

अपने घर के पूरे माहोल को इस्लामी बनाना चाहिये, वरना हमारी आने वाली नसले इस्से बिलकुल अजनबी हो जायेगी, और उस्की वजह से दुनीया और आखिरत की बहुत सी खराबिया पैदा हो जायेगी, अपना रहन सहन, लिबास, अपना कल्चर, खाना पीना सब शरीयत और सुन्नत के मुताबिक होना चाहिये, घर के इस्तेमाल का सामान भी सादा और पाक साफ होना चाहिये, हेसीयत से ज्यादा कीमती सामान जो सिर्फ दिखावे के लिये हो, उस्का जमा करना बेजा फुजूलखर्ची हे और परेशानी का सब्ब हे, क्यूकी हमेशा उस्की हिफाजत का ख्याल करना पडता हे, कभी उनमे ज्यादती की लालच और कभी उन्के खराब हो जाने का डर दिल को परेशान रखता हे, कनाअत तो ज़रूरी सामान मे ही नसीब होती हे,

वेस्टर्न कल्चर हमारे समाज़ को इस कदर जेहरीला करती हे कि हम ना चाहते हुवे भी इस्मे मुबतला होकर अपनी दीनी और इस्लामी निशानीयो से और इस्लामी समाज़ से मेहरूम होते जा रहे हे, इस्लामी वकार और खानदानी रवायात और शराफत के आदाब को बाकी रखना चाहिये, वरना दुनीया मे भी जिल्लत और रूसवायी हे और आखिरत का भी नुक्सान हे, अगर अंजाम पर गौर किया जाये तो ये बात अक्ल खुद मान लेगी.

●झगडे की नहूसत

इल्म मे झगडा करना ईमान के नूर को खत्म कर देता हे, किसी ने पूछा कि अगर किसी को सुन्नत के खिलाफ काम करते हुवे देखे तो क्या करे? फरमाया नरमी से समझा दे और झगडा ना करे.

हवाला: एक हज़ार अनमोल मोती उर्दु से मज़मून का खुलासा लिप्यान्तरण किया गया हे.